भारत-चीन व्यापार घाटा $105.93 अरब: कारण और आगे की राह

खबरों में क्यों

चीन के सीमा शुल्क प्रशासन (GACC) के 14 अक्टूबर 2026 को जारी आंकड़ों के अनुसार जनवरी-सितंबर 2026 में भारत-चीन द्विपक्षीय व्यापार $144.45 अरब रहा — 25.4% की वृद्धि के साथ। भारत का निर्यात $19.26 अरब (+40.7%) बढ़ा, पर चीन से आयात $125.19 अरब (+23.3%) रहा, जिससे व्यापार घाटा $105.93 अरब पहुँच गया — CY2025 के रिकॉर्ड $116.12 अरब को पार करने की राह पर। इसी बीच वित्त मंत्री निर्मला सीतारमन ने बैंकॉक में (IMF-विश्व बैंक वार्षिक बैठकों के मौके पर Atlantic Council संवाद, ~16.10.2026) कहा कि भारत-चीन व्यापार की सबसे बड़ी बाधा गैर-टैरिफ बाधाएँ (NTB) हैं — जेनेरिक दवाएँ, bovine meat, सब्ज़ियाँ और जल्दी बिगड़ने वाली उपज जैसे क्षेत्रों में बाजार-पहुँच नहीं मिल पाती, और phytosanitary जैसी स्वास्थ्य-शर्तों का प्रयोग बाजार रोकने के लिए होता है; करीब एक दशक की बाजार-पहुँच वार्ता निष्फल रही। चीन की प्रतिक्रिया (विदेश मंत्रालय प्रवक्ता Mao Ning): चीन कभी व्यापार-अधिशेष का लक्ष्य नहीं रखता और संतुलित ढंग से व्यापार चाहता है।

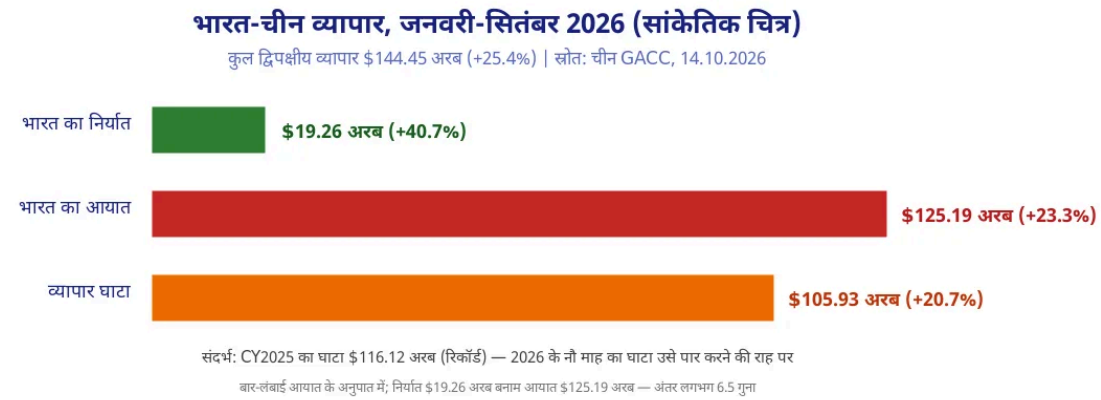
व्यापार घाटा क्या है — और कब चिंता का विषय?

व्यापार घाटा = आयात घटा निर्यात। स्वयं घाटा बुरा नहीं: अगर आयात पूंजीगत और मध्यवर्ती वस्तुओं (मशीनें, कच्चा माल, पार्ट्स) का है, तो वह घरेलू उत्पादन-क्षमता बढ़ाता है। चिंता तब है जब घाटा लगातार और एकतरफा बढ़े, निर्यात सीमित वस्तुओं में सिमटा रहे, और आयात ऐसी रणनीतिक चीज़ों की निर्भरता बन जाए जिनका विकल्प जल्दी न बन सके। भारत-चीन मामले में तीनों संकेत मौजूद हैं — इसीलिए यह आंकड़ा मात्र व्यापार-समाचार नहीं, संरचनात्मक प्रश्न है।

मुख्य तथ्य

जनवरी-सितंबर 2026 (GACC)	राशि	वार्षिक वृद्धि
कुल द्विपक्षीय व्यापार	$144.45 अरब	+25.4%
भारत का निर्यात चीन को	$19.26 अरब	+40.7%
भारत का आयात चीन से	$125.19 अरब	+23.3%
भारत का व्यापार घाटा	$105.93 अरब	+20.7%

संदर्भ-आंकड़े: CY2025 में कुल व्यापार $155.62 अरब, भारत का निर्यात $19.75 अरब और घाटा रिकॉर्ड $116.12 अरब रहा। वित्त वर्ष 2025-26 में भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के रिपोर्टेड घटक-आंकड़े: निर्यात $19.47 अरब (+36.66%), आयात $131.63 अरब (+16%) — इन दोनों का अंतर, लगभग $112.16 अरब, वित्तीय वर्ष का घाटा बैठता है (यह घटकों से गणित है, मंत्रालय की छपी घोषित संख्या नहीं); FY2024-25 का घाटा $99.2 अरब था। चालू वित्त वर्ष के पहले छह माह (वित्त मंत्री के हवाले से): घाटा $68.9 अरब, निर्यात $11.4 अरब, आयात $80.3 अरब।



मौलिक प्रतीकात्मक चित्र: pcsmantra.com

सांकेतिक चित्र: जनवरी-सितंबर 2026 का व्यापार-चित्र — बार-लंबाई आयात के अनुपात में।

संरचनात्मक कारण — घाटा क्यों बना रहता है

मध्यवर्ती-वस्तु निर्भरता: भारतीय विनिर्माण की बड़ी ज़रूरतें — इलेक्ट्रॉनिक्स, मशीनरी, ऑर्गेनिक केमिकल्स और मध्यवर्ती पार्ट्स — चीन से आती हैं; ये घरेलू उत्पादन चलाती हैं, पर मूल्य-वर्धन (value addition) का बड़ा हिस्सा बाहर रह जाता है। **सीमित निर्यात-टोकरी:** भारत का निर्यात मुख्यतः seafood, naphtha और प्रिंटेड सर्किट बोर्ड जैसी चंद वस्तुओं में केंद्रित है। **बाजार-पहुँच की दीवार:** गैर-टैरिफ बाधाएँ — phytosanitary शर्तें, धीमी मंज़ूरियाँ, अपारदर्शी प्रक्रियाएँ — जिन क्षेत्रों में भारत प्रतिस्पर्धी है (जेनेरिक दवाएँ, bovine meat, सब्ज़ियाँ, perishables) वहीं रोक लगती है।

रणनीतिक आपूर्ति-शृंखला: दुर्लभ मिट्टी (rare earths) का उदाहरण निर्भरता की गहराई दिखाता है — अप्रैल 2025 के चीनी निर्यात-नियंत्रणों के बाद भारत के लिए आपूर्ति करीब छह माह ठप रही; अक्टूबर 2026 में चार भारतीय कंपनियों को licences मिले, शर्तों के साथ (अमेरिका को पुनर्निर्यात नहीं, सैन्य उपयोग नहीं) — विदेश मंत्रालय के प्रवक्ता ने पुष्टि की। चीन के पास वैश्विक उत्पादन का ~90% है; उर्वरक आपूर्ति को लेकर भी चिंताएँ बनी हैं।

कूटनीति और नीति-टूलकिट

12 सितंबर 2026 को नई दिल्ली में BRICS शिखर सम्मेलन के मौके पर प्रधानमंत्री मोदी और राष्ट्रपति शी की मुलाकात में व्यापार-असंतुलन, आपूर्ति-शृंखला और बाजार-पहुँच के मुद्दे उठे (MEA रीडआउट, रिपोर्ट-attributed)। वाणिज्य मंत्री पीयूष गोयल संबंधों के पुनर्निर्माण की बात करते हैं, वाणिज्य सचिव राजेश अग्रवाल के अनुसार व्यापार-वार्ता जारी है। नीति-स्तर पर भारत के पास चार उपकरण हैं: DGTR के व्यापार-उपचार (anti-dumping जैसे), गुणवत्ता नियंत्रण आदेश (QCO), Press Note 3 (सीमावर्ती देशों से FDI की जाँच) और PLI योजनाएँ (घरेलू विनिर्माण-प्रोत्साहन)।

विश्लेषण और आगे की राह

तीन परतों में देखें। (1) दिशा बनाम स्तर: निर्यात में +40.7% की उछाल सच्ची खबर है, पर आधार छोटा है — आयात निर्यात से लगभग साढ़े छह गुना; जब तक निर्यात-टोकरी नहीं फैलती, प्रतिशत-वृद्धि घाटे का स्तर नहीं घटाती। (2) घाटे की गुणवत्ता: मध्यवर्ती आयात उत्पादन-क्षमता जोड़ती है, यह तर्क मजबूत है; पर rare-earth अनुभव दिखाता है कि निर्भरता जहाँ रणनीतिक हो, वहाँ 'कुशल आयात' की परिभाषा बदल जाती है — विविधीकरण और घरेलू विकल्प लागत नहीं, बीमा है। (3) कूटनीति-व्यापार संबंध: BRICS मुलाकात, licences और जारी वार्ता तनाव-प्रबंधन के संकेत हैं; पर घाटा-सुधार की कुंजी बाजार-पहुँच (NTB) में है — यही वित्त मंत्री की बैंकॉक टिप्पणी का सार भी है। आगे देखने योग्य: NTB-वार्ता के ठोस परिणाम, PLI की

परिपक्वता, rare-earth licences के बाद आपूर्ति की वास्तविक रफ़्तार। ध्यान रहे: जनवरी-सितंबर 2026 के आंकड़े चीन GACC के; वित्तीय-वर्ष घटक भारतीय वाणिज्य मंत्रालय के रिपोर्टेड आंकड़े; नेता-बयान रिपोर्ट-attributed।

अवधारणा में अंतर

व्यापार घाटा (trade deficit — वस्तुओं का आयात-निर्यात अंतर) बनाम चालू खाता घाटा (current account — वस्तु, सेवा, आय और हस्तांतरण सब मिलाकर)। टैरिफ बाधा (सीमा शुल्क) बनाम गैर-टैरिफ बाधा (NTB — phytosanitary शर्तें, मानक, मंज़ूरी-देरी)। और दुर्लभ मिट्टी (rare earths — 17 तत्व, मैग्नेट/इलेक्ट्रॉनिक्स) बनाम critical minerals (रणनीतिक खनिजों का व्यापक समूह — लिथियम, कोबाल्ट आदि सहित)।

मेंस दृष्टि

GS-II: भारत-चीन संबंध, कूटनीति और व्यापार; GS-III: व्यापार-संतुलन, आपूर्ति-शृंखला सुरक्षा, आत्मनिर्भर विनिर्माण। उत्तर में GACC-आंकड़े ($105.93 अरब घाटा, +40.7% निर्यात-वृद्धि), NTB-बाधा, rare-earth निर्भरता और चार नीति-उपकरण (DGTR, QCO, Press Note 3, PLI) रखें।

UPSC CSE Mains शैली: मौलिक अभ्यास प्रश्न

‘भारत-चीन व्यापार-असंतुलन मात्र आंकड़ों की नहीं, संरचनात्मक निर्भरता और बाजार-पहुँच की समस्या है।’ इस कथन की समीक्षा कीजिए और संतुलन की दिशा में व्यावहारिक मार्ग सुझाइए।

(उत्तर 250 शब्दों में दीजिए) | 15 अंक

उत्तर की रूपरेखा

भूमिका में: घाटा-आंकड़ा + संदर्भ (attributed)।

मुख्य भाग में: संरचनात्मक कारण: मध्यवर्ती निर्भरता, निर्यात-टोकरी, NTB; रणनीतिक आयाम: rare earths, उर्वरक; कूटनीति-पक्ष: BRICS, वार्ता; मार्ग: बाजार-पहुँच वार्ता, PLI, QCO, विविधीकरण।

निष्कर्ष में: बाजार-पहुँच वार्ता और निर्यात-विविधीकरण को रणनीतिक आयात के विकल्पों के साथ आगे बढ़ाने का सुझाव दें; मध्यवर्ती आयात के उत्पादन-लाभ और निर्भरता के जोखिम दोनों रखें। GACC के कैलेंडर-अवधि आँकड़े, भारतीय वित्त-वर्ष के आँकड़े और नेताओं के कथन अलग-अलग प्रस्तुत करें।

स्रोत

- GACC आंकड़ों पर रिपोर्ट — जनवरी-सितंबर 2026 व्यापार (14.10.2026)
- राष्ट्रीय रिपोर्ट — घाटा $100 अरब पार (14.10.2026)
- वित्त मंत्री का बैंकॉक संवाद — NTB सबसे बड़ी बाधा (16.10.2026)
- rare-earth licences: विदेश मंत्रालय प्रवक्ता की पुष्टि सहित रिपोर्ट (अक्टूबर 2026); Modi-Xi मुलाकात: BRICS नई दिल्ली (12.09.2026)

जनवरी-सितंबर 2026 के आंकड़े चीन GACC के; वित्त वर्ष 2025-26 के घटक-आंकड़े वाणिज्य मंत्रालय के रिपोर्टेड आंकड़े — घाटा-अंतर (~$112.16 अरब) स्वयं-गणना, मंत्रालय-मुद्रित संख्या नहीं; नेता-बयान attributed।

यह भी पढ़ें: भारत-चीन सीमा वार्ता: 25वें विशेष प्रतिनिधि दौर के आठ निष्कर्ष | क्वाड विदेश मंत्रियों की दिल्ली बैठक: होर्मुज़ से दक्षिण चीन सागर तक — नियम-आधारित व्यवस्था।

याद रखें: निर्यात +40.7% और घाटा $105.93 अरब — दोनों सच साथ-साथ हैं; जब तक बाजार-पहुँच (NTB) और निर्यात-टोकरी नहीं बदलती, प्रतिशत-वृद्धि घाटे का स्तर नहीं घटाती।